31.12.67 ओमशांति रात्रीक्लास

बच्चे समझते हैं स्वर्ग में तो जरूर जावेंगे। यह भी समझते हैं कि राजाई घराने में आवेंगे। यानी .....कहेंगे। प्रजा को बाहरिया कहा जाता है। यहां अगर रहेंगे तो राजाई दीवाल के अंदर रहेंगे। ऐसे बहुत हैं जो यहां नहीं रहते हैं। बाहर में रहते हैं तो राजाई दीवाल के अंदर ही रहते हैं। बाहर में रहने वाले यहां के रहने वालों से उंच पद पाते हैं। समझाया जाता है कि तुम बाहर रहते हुए तो भी अंदर में रहते हो। ट्रस्टी बनकर चलते रहे हैं। सब कुछ ही ईश्वर का है जो मेरे पास है ,ममत्व नहीं है। जो ऐसे समझकर चलते हैं तो वो भी अंदर में रहने वाले ही कहे जाते हैं। समझते हैं कि हम अपनी कमाई के ट्रस्टी हैं। .....बाबा से पूछे तो बाबा बताय सकते हैं कि उंच राजा कैसे बने। इसकी भी युक्ति है ना। जैसे बच्चों को बाप की मिलकियत का पता रहता है फिर किसको जास्ती नशा और किसको कम नशा रहता है। हर एक ही अपने दिल से पूछ सकते हैं। इसको कहा जाता है विशाल बुद्धि। तुम्हारी बुद्धि तो कितनी ही उंच चली गई है। और कोई को तो शिवबाबा की पहचान ही नहीं है। तुम्हारे (में) भी नम्बरवार हैं। महारथी ,घोड़े सवार ,प्यादे। यह सब ही बातें अंतरमुख होकर विचार–सागर–मंथन करने से आपे ही बुद्धि में आ जाता है। अवस्था को तो जरूर ही देखते हैं। स्कूल में भी रजिस्टर में देखते हैं। टीचर भी चलन तथा पढ़ाई आदि के बारे में बताते हैं। . ...इम्तिहान भी होते हैं। इसमें कच्चा इम्तिहान नहीं होता है। तुम अपना इम्तिहान आपे ही ले सकते हो कि हम कहां तक लायक हैं। बाप भी तो बता सकते हैं। दिल भी तो समझ सकती है ना। इनका एमऑब्जेक्ट भी है। पढ़ाई तो बहुत उंच है। सबका कल्याण हो जाता है। तुम्हारा धर्म बहुत ही सुखदाई है। .....स्वर्ग में क्या है और किसका राज्य होता है यह तो कुछ भी नहीं जानते हैं। तुम भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार ही समझते हो ना। पुरुषार्थी जो भी हैं बहुत पुरुषार्थ करते हैं। तुम समझते हो कि बाबा हाई पोजीशन वाला है। यह बाबा थोड़ा ही अनुभव सुनावेंगे। बच्चे समझते हैं बाकी सबकी जांच करनी पड़ती है। दिल भी अपनी गवाही देती है। स्टुडेंट भी समझते हैं कि हम किन मार्क्स में कम हो जावेंगे। स्टुडेंट्स को तो सब कुछ ही मालूम रहता है। तुम्हारी भी स्टुडेंट लाइफ है ना। अपने को मियां मिट्ठू थोड़ा ही समझना चाहिए। वो भी तो एक भूल है। .....एक्युरेट सर्विस में जाना चाहिए ना। गवर्मेंट की सर्विस में लिमिटे कमाई होती है। पुरुषार्थ तो करना ही नहीं पड़ता है। व्यापारी तो अनलिमिटेड होते हैं। नीचे–उपर तो बहुत ही होता है ना। कमाई बहुत भी हो जाती है। ऑफिसर्स लोग तो खाते बहुत हैं। इन्कमटैक्स या कस्टम पर जो भी होते हैं बहुत खाते हैं। सबका बांधा हुआ होता है। 2000 की आमदनी तो मास में 5000और भी तो मिलता होगा ना। बहुत ही चिंता रहती है। इस चिंता में ल ज्ञान तो कोई ही मुश्किल से ही उठा सकते हैं। सतयुग में तुमको ऐसे जागीर मिलती है जो तो बिल्कुल ही चिंता नहीं रहती है। इस अवस्था का ही फिर खयाल है। तुम बच्चों को तो फिकर है। इस बाबा को तो फिकर नहीं रहता है। ड्रामा अनुसार बनना है जरूर। फिर भी पुरुषार्थ तो जरूर करते हैं ना। स्टुडेंट्स तो समझते हैं कि फलाणी तो हमसे बहुत ही अच्छी है। सुप्रीम टीचर भी तो समझते हैं। तुम ब्र.कु. है। यह ब्रह्मा भी तुमको इन द्वारा ही मिलता है। तो इनको भी दलाली तो बहुत मिलती है ना। अनेक प्रकार से आमदनी वृद्धि को पाती है ना। इनको भागीरथ भी कहते हैं। कल्प2 ही यह होता है। बदल नहीं सकते हैं। ऐसे नहीं ;क्योंकि भगवान सिर्फ भारत में ही आते हैं। और कोई भी जगह नहीं। तो तुम बच्चों को समझाना है। खास लेडीज का ही तुम रखो तो भी तुम्हारे पास बहुत आवें। पर्दानशीन लेडीज हिंदुओं में भी हैं और मुसलमानों में भी हैं। वल्लभाचार्य की स्त्रियां बाहर नहीं निकलतीं। बाप कहते हैं यह ज्ञान सबके लिए है। बाप का परिचय देना है। प्रदर्शनी वा म्यूजियम में एक दिन फीमेल का ,एक दिन मेल का रखना चाहिए। तो पर्दे वाले वा बिगर पर्दे वाले दोनों आ जावेंगे। नारियों की महिमा भी है। श्रीमत द्वारा अपने पति का भी उद्धार करते हैं। नारियां पुरुषों का उद्धार करते(करती) हैं। अब बाबा डायरैक्ट तो देते हैं कोई अमल में लावे। अच्छा, मीठे2 रुहानी बच्चों को रुहानी बापदादा की गुडनाइट।